# आत्मा का भवन ''माँ''

मॉ दिवस पर विशेष, मई द्वितीय रविवार

ऊपर जिसका अन्त नहीं उसे आसमां कहते है,
जहाँ में जिसका अन्त नहीं उसे माँ कहते है।

माँ शब्द की उत्पत्ति जहाँ पालना, लोरी और सिसकियों से शुरू हेती है वहीं दूसरी ओर देशभक्ति वीरता त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति के रूप में भी गायी जाती है। माँ बच्चे की पहली गुरू है। स्कुल में बच्चा चार से छः घन्टे पढ़कर आता है लेकिन माँ की तो हर बात में शिक्षायें समाई होती है। माँ की श्रेष्ठ शिक्षाओं से बच्चे के चरित्र का निर्माण होता है। संसार में जितने भी सतपुरूष होकर जिनके नामों की गणनाअें से इतिहास भरा पड़ा है उनको उन जैसा बनाने वाली कौन थी। सिर्फ उनकी माँ ही थी। महात्मा गाँधी को भी सत्य अहिंसा का पाठ उनकी माँ ने ही पढ़ाया था उन्हीं के कदमों पर चलते आज वो राष्ट्रपिता बन गये।बच्चा एक कच्ची डाली के समान होता है। उस समय उसे जेा मोड़ दे दिया जाय बड़ा होकर वो वैसा ही बन जाता है। माँ का आदर्श बच्चे के साथ जुड़ा होता है। कहते हैं-

माँ संवेदना है, भावना है, एहसास है
माँ जीवन के फूलों में खुशबू का वास है।
माँ पृथ्वी है जगत है धूरी है।
माँ बिना इस सृष्टि की कल्पना अधूरी है।।

धरती को भी माता कहा जाता है क्योंकि सारा बोझ को अपनी गोद में समाये बैठी है इसलिए माँ को त्याग और तपस्या की मूरत ही कहते हैं। माँ धरती की धरोहर है क्योकि उसका गायन युगों-युगों से चला आ रहा है और चलता रहेगा। माँ पालक है तो संहारक भी है। भारत में जितने देवियों के मंदिर बने है वे सब ऊचें -ऊँचे स्थानों पर बने हैं। जिस देवी का जितना ऊॅचाई पर मन्दिर होता है उसकी बहुत महिमा होती है। भक्तगण कष्ट सहकर भी देवी के दरबार में जाते हैं और माँ से सुख शान्ति की प्राप्ति की भीख मांगते रहते हैं। भारत देश में वैष्णोंदेवी का मन्दिर इस बात का साक्षी है। देवी का विराट रूप इस बात का सत्य प्रमाण है कि जिस देवी का रूप जितना विराट बनाया है उसका अर्थ अपने की भक्तों की रक्षा से सम्बन्धित है तथा असुरों के विनाश का परिचायक है। अब हम यह जानना चाहेगें कि है दैव और असुर में अन्तर क्या है। देवता मान दैवीगुण वाले मनुष्य और असुर माना इसके विपरित लक्षण वाले मनुष्य। शास्त्रों में देवियों की अष्ट भुजायें गणेश जी की सूंड, हनुमान जी की पूंछ और राक्षसों की काली भयानक शक्लें बड़-बड़ मूछों या सिंग आदि दिखाये है मगर वे नही होते ये तो सिर्फ उनके अलंकार है। जैसे व्यंग चित्रों आदि में दिखाये जाते हैं। आठ भुजायें अष्ट शक्तियों की प्रतीक है जिनका

गुणगाान भक्त जन करते हैं। बड़ी नाक या सुंड बुद्धिमत्ता की प्रतीक है। इसलिए  इसलिए हर शुभ कार्य को करने के पहले गणेश जी का आह्वान किया जात है।

हम मुनष्य भी देवी या देवता बन सकते हैं बशर्ते उनके गुणों को अपने जीवन में धारण कर लें। इसकें स्वी पहचान और स्वपिता की पहचान जरूरी है। यदि हम स्वयं को आत्मनिश्चय कर मरम प्यारें निराकरार परमात्मा से अपना बुद्धि का योग जोड़ लें तो धीरे-धीरे आत्मा के अन्दर व्याप्त पांच विकारों से छुटकारा पाकर आत्मा को पावन बनाकर उच्च देवपद की प्राप्ति की जा सकती है।

आज माँ की महिमा को ठुकराया जा रहा है। भक्ति भी तमोप्रधान की ओर बढ़ रही है अत: मनुष्यात्मा पतन की ओर उन्मुक्त होती जा रही है। इस पर एक कहानी है-

एक बच्चा बचपन में स्कुल से पेन और कॉपियां चुरारकर ले आता था।उसकी माा ने उसपर ध्यान नहीं दिये। धीरे-धीरे उस बच्चे में चारेी केसंस्कार बढ़ते गये अब वह एक बड़ा चोर और फिर चारे से बड़ा डाकू बन गया। जघन्य अपनाध हत्यायें उसके दैनिक जीवन का लक्ष्य बन गया।एक बार किसी हत्योके आरेप में पकड़ा गया और उसे फासी की सजा सुना दी गई। जब उसे फांसी होने वाली थी उससे पूछा तुम्हारी अन्तिम इच्छा क्या है। उसने कहा मुझे एक बार माँ से मिला दो। जब उसे दो सिपाही उसे उसकी माँ से मिलाने लाये तो उसने सबसे पहले मॉ के कान में कुछ कहा और फिर मां की नाक काट दी। उसने कहा माँ मुझे बचपन से ही रोक देती तो आज मेरी यह दशा नहीं होती।

कहने का तात्पर्य यह है कि सृष्टि अभी गिरती कला की ओर बढ़ रही है। कुकर्मों का ताण्डव मच रहा है ऐसे समय पर यदि हने स्वयं को नहीं पहचाना, परमात्मा को पहचानकर उसकी शक्तियों से भरपूर नहीं हो पाये तो यह दुनियों एक दिन तो विनाश की ओर ढकेली जा ही रही है। संसार में रामराज्य लाने के लिए माा की गरिमा को देवी स्वरूपा का रूप देना होगा तथा माँ को भी अपने मूल कर्तव्यों को पहचान अपने बच्चे, हर परिवार को दैवी गुणों से सजाना संवारना होगा।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com